रिकॉर्डः– तुम्हें पाके हमने..... ओम प्रातः क्लास 4/6/1966
ओम् शान्ति। बाप और क्या कहेंगे! बच्चों को भी कह देते हैं ओम् शान्ति तत् त्वम्। हे बच्चों! तुम भी शान्त स्वरूप हो। तुम भी पतित–पावन हो ना। ऐसे और कोई कह नहीं सकेंगे। कहा जाता है जैसे कांग वैसे बच्चे। तुम बच्चे भी जानते हो जैसे बाबा वैसे हम। बाप भी कहते हैं मैं ज्ञान का सागर हूँ, तुम बच्चे भी समझेंगे हम मास्टर ज्ञान सागर है। गोया ज्ञान नदियाँ ठहरे। सागर के बाल–बच्चे भी होंगे ना। बड़ी–2 नदियाँ भी हैं, बड़े–2 तालाब, बड़े–2 सरोवर भी हैं। वो हैं जड़, तुम हो चेतन। सागर से ही निकले हुए हो। कई बच्चे भी इन (बातों) को समझते नहीं हैं; क्योंकि पढ़ी–लिखी तो बच्चियाँ हैं नहीं। बाबा ने एक बार पूछा था (खाण्ड) किससे बनती है, गुड़ किससे बनता है, तो बोला लाल गन्ने से गुड़ बनता है, सफेद गन्ने से (खाण्ड) बनती है। बिचारी पढ़ी हुई नहीं है ना। अब तुमको कितनी बड़ी बातें समझाते हैं। पानी के सागर से पानी की ही नदियाँ निकलती हैं। मनुष्य बहुत बढ़ते (जाते) हैं तो पानी भी बहुत चाहिए ना। कितने कैनाल्स आदि बनाते रहते हैं। तो तुम बच्चों को उठते–बैठते, चलते–फिरते यही ख्याल रखना है हम इस पतित दुनिया को पावन बनाते हैं। गीत में भी कहते हैं– बाबा, हम आपसे विश्व की बादशाही का वर्सा लेते हैं। यह हमसे कोई छीन नहीं सकेंगे। 21 जन्म यह राजाई कायम रहेगी। बेहद का बाप आय बेहद का राजभाग देते हैं। राजभाग चलाने का लायक बनाते हैं। पवित्र बनाते हैं। बुलाते भी हैं हे पतित–पावन आओ। वह कोई कृष्ण को नहीं बुलाते हैं। निराकार भगवान को बुलाते हैं। जब कहते हैं हे पतित–पावन, तो कृष्ण बुद्धि में याद नहीं आता है। परमात्मा याद आता है। बाप आय हरेक बात समझाते हैं। अभी तुम बच्चे सन्मुख बैठे हो। यह कोई साधु–संत नहीं है। तुम जानते हो निराकार शिवबाबा इस ब्रह्मा तन में प्रवेश कर हमको पढ़ाते हैं। गायन भी है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करते हैं। विनाश, स्थापना के बाद फिर लगा ही हुआ है। इससे सिद्ध है कि पुरानी दुनिया में आते हैं। ब्रह्मा द्वारा स्थापना नई दुनिया की, शंकर द्वारा विनाश कराते हैं पुरानी दुनिया का। अनेक धर्मों का विनाश कराते हैं। सतयुग में एक धर्म था। अभी तो अनेक धर्म हैं। एक धर्म वाले देवी–देवताओं की निशानियाँ, चित्र आदि हैं। इन लक्ष्मी–नारायण को कहते ही हैं विश्व का मालिक, स्वर्ग का मालिक। स्वर्ग का मालिक सो विश्व का मालिक हो गया। यह बातें अभी तुम बच्चों की बुद्धि में बैठी है। बाप कहते हैं बच्चे मनमनाभव। यह बच्चों को घड़ी–2 सावधानी मिलती है। बाप को और वर्से को याद करो। यह भूलो मत। और प्वाइंट्स भूल (जा)ते हैं। यह तो मुख्य है ना। बाप ही पतित–पावन है। वो युक्ति बताते हैं पावन होने की। बाप कहते हैं तुम सतोप्रधान थे। अब तमोप्रधान, पतित बन गए हो। 84 जन्म पूरे लिए हैं। अब तुमको फिर (सतो)प्रधान बनना है। सतोप्रधान बनो तब ही तुम चल सकेंगे पवित्र दुनिया में। निराकारी दुनिया भी पवित्र है। साकारी दुनिया (स्वर्ग) भी पवित्र है। अपवित्र पतित दुनिया यह है। आत्मा भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। यह जो सृष्टि का नाटक है इसमें ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन भी आ जाता है। सृष्टि का चक्कर यहाँ फिरता है। सतयुग–त्रेता, द्वापर–कलियुग यहाँ है। यह कोई सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में होते। यह सृष्टि का चक्कर यहाँ स्थूलवतन में (ही) है। इनको मनुष्य सृष्टि कहा जाता है। वो है आत्माओं की निराकारी दुनिया। वो हैं ब्रह्मा–विष्णु–शंकर की आकारी दुनिया। यह साकारी सृष्टि कितनी बड़ी है। सतयुग में कितनी छोटी सृष्टि होती है। वहाँ है ही एक धर्म। बाकी मनुष्य जो कहते हैं वहाँ भी दैत्य आदि थे, यह है झूठ। तुम समझते हो नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश गाया हुआ है। सबका विनाश होगा वा सतयुग हेविन की स्थापना होगी। तुम भी बाप के साथ खिदमत कर रहे हो। बाप भी आते ही हैं बच्चों की खिदमत करने। यह है बेहद का बाप। देखते हैं हमारे बच्चे बहुत दुखी हैं। तो ज़रूर तरस पड़ेगा ना। वो है ही रहमदिल बाप। ब्लीसफुल, पीसफुल है। नॉलेजफुल है। अभी तो सारी दुनिया में अशान्ति है। एक बाप के

सिवाय और कोई शान्ति दे ना सके। सन्यासियों पास कोई शान्ति थोड़े ही है। वो खुद (ही) कहते हैं शांति कैसे प्राप्त हो; क्योंकि यह है ही पतित दुनिया। बाप ही कहते हैं सम्पूर्ण सुख, सम्पूर्ण शान्ति आकर लो। बेहद के बाप के सिवाय और कोई दे नहीं सकता। गीत में भी गाते हैं यदा यदा हि... अब यह किसने कहा? कहते हैं भगवानुवाच्य। अच्छा, कब? यह कोई बता ना सके। भगवान ने गीता सुनाई, कब? वो कृष्ण भगवानुवाच्य कह देते हैं। सतयुग में तो पतित दुनिया है नहीं। कलियुग में तो और ही पतित होंगे। वो आते ही है पावन दुनिया स्थापना करने। तो ज़रूर अंत में आवेंगे। कितने बड़े–2 विद्वान आदि हैं, कुछ नहीं जानते। उन्हों के कितने फॉलोअर्स हैं। लाखों–करोड़ों फॉलोअर्स होते हैं। प्रजा है बहुत बड़ी। पतित दुनिया में ज़रूर सब पतित ही होंगे। है ही रावण राज्य। एक/दो को पतित ही बनाते हैं। अनेक प्रकार के मंत्र–जंत्र आदि देते हैं। इस (बाबा) ... भी तो बहुत गुरु आदि किए हैं। हठयोग भी अथाह है। ऊपर से रस्सी निकालते, नीचे से निकालते हैं। कहते हैं हम सफाई करते हैं। कितने हठयोग आदि है। आत्मा के लिए कह देते हैं वो निर्लेप है। मनुष्यों को उल्टी बात सुना दी है। वास्तव में आत्मा की सफाई चाहिए, जिस आत्मा में ही खाद पड़ी है। यह और किसको पता नहीं। कहते भी हैं यह पापात्मा है। बहुत पाप करते हैं। यह महान आत्मा, पुण्यात्मा है। ऐसे नहीं कहेंगे महान परमात्मा। सन्यासियों के लिए कहेंगे पवित्र आत्मा है; क्योंकि सन्यास किया हुआ है। अब बाप समझाते हैं आत्मा को पवित्र बनाने वाला सिवाय एक परमात्मा बाप के और कोई हो नहीं सकता। सन्यासी भी जन्म तो भ्रष्टाचार से ही लेते हैं। पतित दुनिया में पावन आत्मा कोई हो ना सके। अभी सैपलिंग लगता है। धीरे–2 वृद्धि होती जावेगी। वो तो है छोटे–2 मठपंथ, टाल–टालियाँ। उनमें कोई मेहनत थोड़े ही लगती है। अनेक प्रकार के मंत्र देते हैं। किसम–2 के मंत्र देते हैं। यह भी वशीकरण मंत्र है, जिससे तुम 5 विकारों पर जीत पहनते हो। राम–2 का मंत्र जपते हैं। इससे फायदा तो कुछ भी नहीं है। यहाँ तो बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप नाश होंगे। तुम पवित्र आत्मा बन जावेंगे। याद को ही योग कहा जाता है। भारत का प्राचीन योग बहुत मशहूर है। इस योग से ही तुम विश्व पर जीत पहनते हो। भारत का राजयोग बहुत नामीग्रामी है। यह बाप के सिवाय और कोई सिखा ना सके। तुम हो ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ। ब्रह्माकुमारियाँ तो यहाँ ही होंगी ना। प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे। वो भी ज़रूर ब्रह्मा के साथ होंगे। ब्राह्मण कुल भी तो ज़रूर चाहिए। इसको कहा जाता है सर्वोत्तम ऊँच ते ऊँच ब्राह्मणकुल। अभी तुम ब्राह्मण हो, फिर उथल खावेंगे। बाजोली खेलते हैं ना। शूद्र से ब्राह्मण बने हो फिर देवता–क्षत्रिय... तो अब बाप समझाते हैं– मीठे–2 बच्चों, बहुत थोड़ी बात है, बाप की याद में रहो। यह भी तो बुद्धि में है बाबा हमको 84 जन्मों का राज़ बता रहे हैं। 84 लाख अथवा 84 जन्मों का हिसाब तो चाहिए। कोई को पता नहीं। 84 लाख का तो हिसाब कोई बता ना सके। मनुष्य 84 जन्मों का चक्कर लगाते हैं। आत्माएँ ऊपर से आती हैं पार्ट बजाने लिए। सतयुग से लेकर कलियुग अंत तक आती ही रहती हैं। हरेक अपना–2 पार्ट बजाते रहते हैं। इन बातों को मनुष्य मात्र नहीं जानते। एक बाप ही जान सकते। मनुष्य को तो कब परमपिता कहा नहीं जाता। गॉड फादर नहीं कहा जाता। गॉड फादर कहने से निराकार शिव तरफ बुद्धि जाती है। जीवात्मा का बाप तो होगा ना। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है। निराकार बाप का नाम शिव है। तुम्हारा भी एक ही आत्मा नाम है। फिर शरीर पर भिन्न–2 नाम पड़ते हैं। परमपिता परमात्मा भी शरीर में आकर ज्ञान सुनाते हैं। शरीर बिगर थोड़े ही सुनावेंगे। इनका तो अपना नाम है। तो बाप समझाते हैं मेरा शरीर का कोई नाम नहीं। ना मैं पुनर्जन्म में आता हूँ। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। इनको भी मालूम नहीं पड़ता कि कब मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। कोई (तिथि)–तारीख नहीं। हाँ, मैं कल्प के अंत अर्थात् रात में आता हूँ। अभी रात है ना। यह है ही पतितों की दुनिया। मैं आया हूँ पावन दुनिया अर्थात् दिन बनाने। यह भी

नहीं जानते कि बाबा ने कब प्रवेश किया। हाँ, विनाश सा० किया। बहुत ध्यान में जाते थे। ज्ञान चर्चा चलती थी। यह तो नहीं जानता था ना। बाबा ने कब प्रवेश किया वो कोई (तिथि)–तारीख–वेला नहीं निकाल सकते। कृष्ण को भी पूजते हैं ना। इनका रात्रि को जन्म दिखाते हैं। किस समय, कितने मिनट आदि सारा हिसाब निकालते हैं। बाप कहते हैं मैं तो हूँ निराकार। जैसे और मनुष्य जन्म लेते हैं वैसा मेरा जन्म थोड़े ही होता है। मेरा तो अलौकिक दिव्य जन्म है। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ फिर चला जाता हूँ। बैल पर सारा दिन कोई सवारी थोड़े ही करते हैं। मुझे जिस समय बच्चे याद करते मैं हाज़िर हूँ। बाप आकर बच्चों से मिलते हैं। गुडमॉर्निंग करते हैं। जैसे मनुष्य एक/दो में मिलते हैं, राम–2 वा नमस्ते करते हैं। यह तो है रूहानी बेहद का बाप। कहते हैं मैं तुम सब बच्चों का बाप हूँ तो शिवबाबा के संतान तुमको अर्थात् बच्चों को कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिए। बेहद का बाप आया हुआ है हमको बेहद का वर्सा दे रहे हैं। बच्चे बाप को देख खुश होते हैं ना। ढेर (बच्चे) हैं। बच्चे जानते हैं हमको बाबा स्वर्ग का लायक बनाय स्वर्ग की राजाई देते हैं। प्रजा भी तो ऐसे कहेगी ना हमारा राज्य है। जैसे भारतवासी कहते हैं यह हमारा भारत देश है। तुम कहेंगे स्वर्ग हमारा देश है। प्रजा भी कहेगी। तुम बच्चे जानते हो हम नर्कवासी हैं, फिर स्वर्गवासी बनेंगे। अब सिर्फ बाप को और (वर्से) को याद करना है। और कोई तकलीफ बाबा नहीं देते हैं। रहो भी भल गृहस्थ व्यवहार में। ऐसे थोड़े ही सबको यहाँ आकर बैठना है। सब यहाँ भाग कर आवे तो इतने सबको बाबा कहाँ रहा सकते। इतने सब ढेर बच्चे एक ..... कैसे इकट्ठे हो सकते। सब सेन्टर्स के बच्चे एक ही बार मिल कर आ जाय तो ठहर सकेंगे? मुश्किल है ना। हाँ, दिन–प्रतिदिन बच्चे वृद्धि को पाते रहते हैं। इनकी भी कुछ युक्ति रचते रहेंगे। यह सब आसपास वाले मकान लेने पड़ेंगे। मकान वाले से पूछेंगे कितना माँगते हो। लाख, दो लाख, अच्छा लो। समय पर तो (ले)ना पड़ेना ना। पैसे (की) तो बात ही नहीं। समय बड़ा नाजुक होता (जावेगा)। आफतें आती रहेंगी। बाप तो अविनाशी है। अविनाशी खज़ाना बच्चों को देते हैं। बहुत ढेर बच्चों को आना होगा। बाबा विचार करते हैं इतने सब ढेर कहाँ आकर रहेंगे। ड्रामा में यह सब नूँध है। कल्प पहले जैसे आकर रहे थे वैसा आकर रहेंगे। बाबा कहते हैं तुम फिकर क्यों करते हो। वेट एण्ड सी। तुम पढ़ते रहो। मनमनाभव। तुम बच्चों को यही बुद्धि में ख्याल रखना है अभी हमको कर्मातीत अवस्था में जाना है, सतोप्रधान बनना है। याद से ही पावन बनेंगे। बाबा बात तो बहुत सहज बताते हैं। अति सहज है। सिर्फ बाबा को याद करना है। देखो, गाबड़ियाँ आती हैं तो याद आने से चिलाती है ना। वो तो है जानवर। आजकल के मनुष्य भी जानवर मिसल है। तुम बच्चों ने रड़ियाँ मारी है ना। आगे चल बहुत चिलावेंगे। बहुत याद करेंगे। तुम बच्चे तो अब जानते हो बाबा आया हुआ है, विनाश तो होना ही है। नैचरल कैलेमिटीज़ आनी है। सब आपस में लड़ते–झगड़ते रहते हैं। कितना खर्चा कर बॉम्ब्स आदि बनाते हैं। बहुत पैसे जाते हैं। खर्चा तो होता है ना। इतना खर्चा कहाँ से लावे! पेट के लिए अन्न नहीं है। डरते भी हैं मौत से। भारत में कहते हैं बॉम्ब्स बनाओ। बॉम्ब्स की लड़ाई चलेगी। अभी बनाते ही ऐसे हैं जो गिरे और मनुष्य मर जावे। चीज़ बनाने में पहले टाइम लगता है, फिर तो मिनट मोटर, जल्दी–2 बनती जाती है। बॉम्ब्स भी कोई थोड़े बनेंगे क्या? तुम बच्चे जानते हो सृष्टि का मौत है। अब बेहद के बाप से वर्सा लेना है। सब तो वर्सा नहीं लेंगे। बच्चों को अब अपना ख्याल करना है– बाप से हम वर्सा कैसे लेवें। भारतवासियों (को) ही लेना है। गीता भी है भारतवासियों का शास्त्र। देवी–देवता धर्म का शास्त्र है। बाकी तो हैं छोटे–2 .....का कोई गायन नहीं। ब्राह्मण धर्म है सबसे ऊँच। ब्राह्मणों का काम है कथा सुनाना। तुम कह सकते हो ..... ब्रह्माकुमारियाँ हैं। ब्रह्मा के बच्चे हैं। हमको डाडे का वर्सा मिल रहा है। भल यहाँ बैठे हो। आत्मा का खयालात चलनी चाहिए हम शांतिधाम के रहने वाले हैं। अब जा रहे हैं सुखधाम। यह है (दुख)धाम। अंधे की औलाद अंधे हैं। इसको कहा जाता है नर्क। तुम बच्चे जानते हो अभी हम संगम

पर हैं। हम संगमयुगी ब्राह्मण हैं। बाकी सब हैं शूद्र। वो तो समझते हैं कलियुग की आयु 40 हज़ार वर्ष है। यह सब गपोड़े मारते रहते हैं। इसलिए बाप कहते हैं यह सब शास्त्र हैं झूठे। शास्त्रों को झूठा कहने से कइयों को आग लग जाती है। बाप खुद कहते हैं वेद–शास्त्र आदि यह सब भक्तिमार्ग के हैं। यह कोई ज्ञान के नहीं हैं। यह बनते ही बाद में हैं। सतयुग में होते नहीं। तुम शिवालय में रहते थे। वो है शिवबाबा का स्थापन किया हुआ स्वर्ग। उसमें देवी–देवताएँ रहते थे। इसलिए उनका नाम ही रखा है शिवालय। इनको कहा जाता है वैश्यालय। पतित दुनिया है ना। तुम समझते हो हम शिवालय अथवा राम राज्य में जाते हैं। शिवालय अथवा स्वर्ग स्थापन किया शिवबाबा ने। यह वैश्यालय स्थापन किया रावण ने। इस समय सब वैश्यालय में रहने वाले हैं। तुम अब (वैश्या)लय से निकल संगम पर खड़े हो। इनको संगमयुग कहा जाता है। शिवालय में जाने लिए पुरुषार्थ करते हैं। मनुष्य तो वैश्यालय में ही हैं। शिवालय का पता नहीं है। यह भी तुम जानते हो शिवालय से वैश्यालय में आने में 84 जन्म लिया। अब हम चल पड़े हैं। हमारा बुद्धि का योग अब शिवालय से है। फिर हम आवेंगे शिवालय, नई दुनिया में। यह भारत ही शिवालय और वैश्यालय कहा जाता है। और कोई खण्ड को नहीं कह सकते। कहते हैं याद भूल जाती है। अरे, बाप को याद करना तो बहुत सहज है। अति सहज है। बाप की याद से वर्सा भी ज़रूर (बुद्धि) में आवेगा। तुम बच्चों की बुद्धि में है हमारा बड़ा बाबा है। उससे हम बेहद का वर्सा ले रहे हैं। यह कख ... को हम क्या करेंगे। यह तो काम में आने वाली चीज़ नहीं है। सिर्फ पेट को खाना चाहिए। पेट कोई जास्ती नहीं खाता है। पेट को चाहिए दो रोटी। भील लोग क्या खाते हैं? सिर्फ रोटला खाते हैं। क्या खर्चा होगा? 8 आने सेर आटा मिलता है। सेर से 16 रोटी बनती है। तो पेट कुछ नहीं खाता है। दो रोटी खाना और शिवबाबा के गुण गाना। जास्ती हैरान ना होना है। पिछाड़ी को तो अन्न ही मुश्किल मिलेगा। समझ तो सकते हो क्या हाल होना है। खूनीनाहक का खेल होना है। यह सब नाहक होता है ना। तुम कुछ करते थोड़े ही हो। मनुष्य मरते ही रहेंगे। मरेंगे भी बहुत जल्दी। गैस आदि ऐसा डालते हैं जो झट खतम कर देंगे। बहुत इज़ी मौत हो जावेगा। बाप कहते हैं बच्चों को दुखी थोड़े ही करना है। इसलिए बाप खातरी (करते) है। तुमको बिल्कुल किवाना(खिजाना) नहीं पड़ेगा। तुम बाप की ही याद में होंगे। ऐसे बैठे–2 खुशी से शरीर छोड़ेंगे। बस। चले जावेंगे। फिर वापिस इस मृत्युलोक में आवेंगे ही नहीं। जो अच्छी रीति याद में रहने की मेहनत करेंगे उनका मौत ऐसे सहज होगा। मेहनत सारी याद में रहती है। इसलिए प्राचीन राजयोग गाया जाता है। देही–अभिमानी बनना है। समझते हो हम आधा कल्प देही–अभिमानी बनते हो। अब इस अन्तिम जन्म में देही–अभिमानी बनते हैं तो इसमें मेहनत लगती है। है भी बहुत सहज। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम मेरे पास आ जावेंगे। पक्की याद ठहर जाए जैसे आशुक–माशुक की ठहरती है ना। ..... रहो, बुद्धि में बाप को (याद) करो। मोस्ट बिलवेड बाबा है। अभी जाना है अपने घर। आत्मा कहती है हमारी अब पीठ वैश्यालय तरफ है, मुँह शिवालय तरफ है। अच्छा, मात–पिता का मीठे–2 बच्चों प्रति यादप्यार, गुडमॉर्निंग। ओम।

(यह) है नई नॉलेज। यह सिवाय बाप के कोई दे ना सके। इसलिए कोई को भी पता नहीं है। इसलिए 7 रोज़ समझाया जाता है। 7 रोज़ अखण्ड पाठ रखते हैं। रामायण भी 7 रोज़ है। असल में यहाँ का 7 रोज़; क्योंकि 7 रोज़ बिठाया जाता है; क्योंकि पतित हैं। यह अभी तुमने जाना है कि यह पतित दुनिया है। भारत पावन था, इस समय भारत पतित है; परन्तु पतित होते हुए भी कोई की बुद्धि में नहीं बैठता। अभी है भक्तिमार्ग। ज्ञान देने वाला एक है। यहाँ कायदा कड़ा है। जब तक 7 रोज़ ना समझे। आधा कल्प की कड़ी बीमारी है। 7 रोज़ पहले बैठ समझे। हम बिल्कुल ही पतित हैं। 5 विकारों की कड़ी बीमारी है। यहाँ के कायदे कड़े हैं। यहाँ से अलग–2 फार्म भराया जाता है। फिर समझाया जाता है। फिर दो रोज़ बाद (फिर) फार्म भराया जाता है। फिर लिख कर भी आना है आज यह समझा। अच्छा, ओम।